ज्ञानसरोवर। फिल्म एवं टी.वी. सीरियल अभिनेत्री रीमा लागू ने ब्रह्माकुमारी विलेपार्ले सबजोन द्वारा 25 से 29 नवम्बर 2012 तक 'राजयोग द्वारा आंतरिक शांति एवं खुशी की प्राप्ति' विषय पर आयोजित कार्यक्रम के उदघाटन में सभा को सम्बोधित करते हुए कहा कि शहरों में प्रकृति से दूर सीमेंट की दीवारों के बीच हमारा जीवन सीमित विचारों में सिमट जाता है लेकिन यहाँ ऐसे आध्यात्मिक ऊर्जा व प्राकृतिक सम्पदा से सम्पन्न परिसर में आकर बहुत विशालता व उच्चता का अनुभव हो रहा है। यहाँ के राजयोगी भाई-बहन जिस सरलता, सहजता व प्रेम से आपस में व्यवहार कर रहे हैं उसे देखकर मैं अचंभित व अंतर्मुखी हो गई हूँ। मेरा यहाँ इनसे कुछ सीखने व हासिल करने आई हूँ। यहाँ का ज्ञान मुझे शक्ति व प्रेरणा देगा ऐसा मुझे विश्वास है। ऐसे महान कार्य में कभी भी मेरी किसी भी प्रकार की सेवा की जरूरत हो तो मैं उसे अपना सौभाग्य समझूंगी।

ब्रह्माकुमारी संस्था की संयुक्त मुख्य प्रशासिका दादी रतनमोहिनी ने कहा कि सृष्टि चक्र में सतयुग ऐसा समय था जब भारत में हर आत्मा सुख-शांति-पवित्रता के साथ धन-सम्पदा से भी सम्पन्न थी। वर्तमान समय परमात्मा स्वयं आकर आध्यात्मिक ज्ञान द्वारा पुन: ऐसी पावन दुनिया स्थापन करने का कल्याणकारी कार्य कर रहे हैं। सतयुग में हर आत्मा सतोप्रधान व शुभभावनाओं से सम्पन्न थी। इस दुख की दुनिया को सुख की दुनिया में बदलने के लिए यह संस्था प्रयासरत है। हम सभी देह रूपी वस्त्र को धारण कर पार्ट बजा रही आत्मा हैं। हम सभी आत्माएं परमात्मा की संतान है अत: हमें उनकी श्रीमत पर चल अपना भाग्य प्राप्त करना है।

बिजनेस विंग की राष्ट्रीय संयोजिका ब्र.कु.योगिनी ने कहा कि खुशी ऐसी चीज है जिसे हम बाह्य साधनों द्वारा स्थायी रूप से प्राप्त नहीं कर सकते। आंतरिक खुशी का अनुभव करने के लिए साधन की बजाय साधना अधिक सहायक सिद्ध होती है। खुशी वास्तव में आत्मा का स्वाभाविक गुण है। जो खुशी हमें अंतर की यात्रा से प्राप्त हो सकती है उसके लिए हम बाहर सम्बन्धों व साधनों में ढूंढने की कोशिश कर रहे हैं। खुशी जैसा कोई खजाना व खुराक नहीं है। जीवन में खुशी का महत्व इतना अधिक है कि उसके बगैर जीवन ऐसा ही है जैसे मनुष्य जीवित तो है लेकिन कोमा में है। आध्यात्मिक ज्ञान हमें यह अनुभूति कराता है कि आत्मा की वास्तविक सम्पत्ति ही पवित्रता, सुख, आनंद व शान्ति है। शांति व खुशी का अनुभव हम स्वयं भी करें और अन्य आत्माओं को भी कराएं।

मुम्बई से आईं भावना सोमैया, पत्रकार, लेखिका एवं फिल्म क्रिटिक ने कहा कि सब कुछ दुकान में पैसे से मिलता है लेकिन एक ही चीज नहीं मिलती वह है खुशी। कभी भी मन अशांत होता है या कुछ समस्या होती है तो मैं ब्रह्माकुमारी सेंटर चली जाती हूँ तो मन शांत हो जाता है और समाधान प्राप्त हो जाता है। बहुत बड़ा आदमी बनने के लिए बहुत बड़े गुण का होना आवश्यक नहीं बल्कि छोटे-छोटे गुण ही उन्हें बड़ा बनाते हैं। महान आत्माएं अपने कार्य को कुछ अलग ढंग से करती हैं।
दिप्ती संजगिरी, निदेशिका, एचआरडी डिपा.भारत पेट्रोलियम कार्पो.लिमि.ने कहा कि परिवर्तन पहले स्वयं में लाना आवश्यक है लेकिन इसमें हर दिन हमें नई चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। इस संस्था में जितने प्रभावी ढंग से संगठित रूप से परिवर्तन का कार्य चल रहा है वह प्रेरणादायी है। आंतरिक शांति के लिए पहले स्वयं को जानना जरूरी है। जब तक हम स्वयं को नहीं समझे हैं तब तक हम अपनी क्षमता का उपयोग नहीं कर सकते।

डॉ.पी.सी.पतंजली, पूर्व उप कुलपति ने अपना अनुभव सुनाते हुए कहा कि 1963 में जब मैं दिल्ली में अध्ययनरत था तो वहाँ ब्रह्माकुमारीज के पहले सेन्टर कमला नगर में मेरा जाना हुआ था। मुझे यह अनुभव हुआ कि हमारी पढ़ाई तो सांसारिक आवश्यकताओं को पूर्ण करने के लिए है लेकिन यहाँ की आध्यात्मिक पढ़ाई आत्मा को परमात्मा से जुड़ने का मार्ग बताती है तथा व्यक्ति को सही अर्थ में व्यक्ति बनाती है। ब्रह्माकुमारी संस्था के भाई-बहनों की कथनी व करनी में समानता है। यहाँ के भाई-बहनें प्रसन्न, शांत व हर परिस्थिति में विनम्र रहते हैं। यहाँ आने से यह भासना आती है कि हम स्वर्ग में आ गये हैं।

उद्घाटन कार्यक्रम संचालन वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका ब्र.कु. गीता बहनजी ने किया और सभी का आभार प्रदर्शन ब्र.कु. मोहनभाई पटेलने किया।